ISSN: 2278-4632
Vol-15, Issue-02, No.03, February: 2025

वडोदरा शहर के शाही महल : एक ऐतिहासिक और पुरातात्विक सर्वेक्षण

पलक जगदीश व्यास, शोधार्थी, माधव विश्वविद्यालय, आबू रोड, राजस्थानईमेल: palak9296@gmail.com
डॉ. संजय परिहार, माधव विश्वविद्यालय, आबू रोड, राजस्थान
डॉ. प्रियांक तलेसरा, दी लॉस्ट वर्ल्ड रिसर्च ऑर्गनिऐएशन, राजस्थान

शोध सार:
वडोदरा, जिसे महलों का शहर कहा जाता है, इस तथ्य से स्पष्ट है कि शहर में एक दिलचस्प संख्या में महल स्थित हैं। वडोदरा में लगभग दस प्रमुख राजमहल हैं, जो विभिन्न कालखंडों में, विभिन्न प्रसिद्ध आर्किटेक्ट्स और इंजीनियरों द्वारा निर्मित किए गए। गुजरात का यह एकमात्र शहर है, जहाँ इण्डो-सारसेनिक (भारत-अरबी) स्थापत्यशैली, मराठा आर्किटेक्चर, मुग़ल आर्किटेक्चर, स्कॉटिश आर्किटेक्चर और यूरोपीय स्थापत्यशैली का अद्भुत मिश्रण देखने को मिलता है। वडोदरा शहर के शाही महलों की रक्षा संरचनाएँ, शाही महल बनाने का उद्देश्य और वर्तमान में इन महलों की स्थिति पर किए गए सर्वेक्षण से यह स्पष्ट होता है कि यह महल प्राचीन वास्तुकला का उदाहरण हैं। इन महलों में विशाल संरचनाएँ, प्राचीन किलेदार दीवारें और रक्षा-प्रवेश द्वार हैं, जो अपनी समय की सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्थिति को दर्शाते हैं।
मुख्य शब्द: वडोदरा शहर, शाही महल, वडोदरा की संस्कृति, गायकवाड़ वंश, शाही राजमहल, महलों का अतीत और वर्तमान

मूल आलेख:
वडोदरा, जिसे बड़ौदा के नाम से भी जाना जाता है, भारतीय इतिहास और संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। वर्ष 1947 में जब भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई, तो बड़ौदा राज्य का बंबई राज्य में विलय कर दिया गया था। इसके बाद 1 मई 1960 को बंबई प्रांत को गुजरात और महाराष्ट्र राज्यों में विभाजित किया गया, और बड़ौदा आधिकारिक रूप से गुजरात का हिस्सा बन गया।[1]

वडोदरा शहर अपनी वास्तुकला के कारण विशेष रूप से प्रसिद्ध है। यह शहर महलों का शहर कहलाता है और इसका यह नामकरण महलों की संख्या और उनके ऐतिहासिक महत्व को देखते हुए किया गया है। वडोदरा में लगभग दस प्रमुख राजमहल हैं, जिनमें से प्रत्येक महल विभिन्न समयों और विभिन्न स्थापत्य शैलियों के अनुरूप बना है। इन महलों की वास्तुकला और निर्माण के पीछे गायकवाड़ वंश के शाही परिवार का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

गायकवाड़ वंश ने वडोदरा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्होंने न केवल प्रशासनिक और राजनीतिक दृष्टि से वडोदरा को सशक्त किया, बल्कि यहाँ के शाही महलों का निर्माण भी किया, जो आज के समय में वडोदरा की पहचान बने हुए हैं। इन महलों की वास्तुकला का अद्वितीय मिश्रण, जैसे कि इण्डो-सारसेनिक (भारत-अरबी) शैली, स्थानीय मराठा आर्किटेक्चर, मुग़ल शैली, स्कॉटिश और यूरोपीय शैली के तत्व, इन महलों को विशेष रूप से आकर्षक बनाते हैं। इन महलों में शाही परिवार के सदस्य रहते थे और यहाँ की संस्कृति, परंपराएँ और रीति-रिवाजों का पालन किया जाता था।[2]

वडोदरा शहर के इन महलों में प्राचीन वास्तुकला के साथ-साथ सुरक्षा और संरक्षण का विशेष ध्यान रखा गया था। महलों की रक्षा दीवारें, किलों जैसी संरचनाएँ, और सुरक्षा के लिए बनाई गई विशेष सुविधाएँ आज भी

Copyright @ 2025 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-15, Issue-02, No.03, February: 2025

दर्शकों को आकर्षित करती हैं। वडोदरा के महल न केवल स्थापत्य कला के अद्भुत उदाहरण हैं, बल्कि वे इस क्षेत्र के इतिहास, संस्कृति और समाज की गहरी झलक भी प्रस्तुत करते हैं।

वर्तमान में इन महलों का रख-रखाव और संरक्षण एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, लेकिन इनकी ऐतिहासिक महत्ता और सांस्कृतिक धरोहर को ध्यान में रखते हुए, कई महलों का संरक्षण किया जा रहा है ताकि वे आने वाली पीढ़ियों के लिए संरक्षित रह सकें। इस सर्वेक्षण में यह देखा गया है कि वडोदरा के शाही महल न केवल उनके स्थापत्य के लिए, बल्कि उनके ऐतिहासिक महत्व और सामाजिक संदर्भ के कारण भी महत्वपूर्ण हैं।[3]

यह आलेख वडोदरा शहर के शाही महलों की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और स्थापत्य दृष्टि से महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है, और यह दर्शाता है कि कैसे इन महलों का संरक्षण भविष्य में इस अद्भुत धरोहर को संरक्षित रखने में सहायक हो सकता है। आदि के बारे में वडोदरा के शाही महलों पर व्यापक शोध किया गया है। ये महल, जो पहले राजपरिवार के निवास स्थान हुआ करते थे, आज भी अपने पुराने ऐतिहासिक वैभव की गवाही दे रहे हैं। वर्तमान समय में, ये महल राजपरिवार की ऐतिहासिक धरोहर के प्रतीक बने हुए हैं, और वडोदरा के निवासी आज भी इन्हें गर्व से याद करते हैं। इन महलों के द्वारा हमें न केवल वडोदरा के ऐतिहासिक संदर्भ की समझ मिलती है, बल्कि यह भी दर्शित होता है कि कैसे राजपरिवारों ने अपनी शक्ति और प्रतिष्ठा को स्थापत्य कला के माध्यम से व्यक्त किया।[4]

अनुसंधान पद्धति:

इस शोध पत्र में वडोदरा शहर के शाही महल निर्माण की विश्लेषणात्मक दृष्टि से ऐतिहासिक और पुरातात्विक पद्धतियों का उपयोग किया गया। विशेष रूप से, प्राइमरी स्रोतों में ऐतिहासिक दस्तावेज, मानचित्र, और स्थल पर किए गए अध्ययन का सहारा लिया गया। इन दस्तावेजों और सामग्री के माध्यम से महल निर्माण की प्रक्रिया और उस समय की तकनीकी विधियों का अध्ययन किया गया।

इसके साथ ही, सेकेंडरी स्रोतों में प्राचीन ग्रंथों, इतिहासकारों की रचनाओं, और पहले से किए गए शोध कार्यों का उपयोग करके इन महलों के निर्माण की कार्यप्रणाली और उनके सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभावों का विस्तृत अध्ययन किया गया।

स्थल का प्रत्यक्ष निरीक्षण करने से महल की स्थापत्य कला, निर्माण सामग्री, उपकरणों और प्राचीन धातु-प्रयोग की तकनीकों का विश्लेषण किया गया। इसके अतिरिक्त, स्थानीय संग्रहालयों और संग्रहालय अभिलेखों से प्राप्त जानकारियों को इकठ्ठा कर उनका तुलनात्मक विश्लेषण किया गया, ताकि इन महलों के ऐतिहासिक और वास्तुशिल्पीय महत्व को बेहतर समझा जा सके।

अनुसंधान समस्या:

वडोदरा के शाही महल भारतीय इतिहास और स्थापत्य कला का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, लेकिन इस पर अभी तक पर्याप्त शोध कार्य नहीं हुआ है। इन महलों के निर्माण और उनकी तकनीकी प्रक्रियाओं को आधुनिक दृष्टिकोण से समझने की आवश्यकता है।

विशेष रूप से, यह जानना महत्वपूर्ण है कि गायकवाड़ वंश और मुग़ल काल के दौरान इन महलों का निर्माण किस तरह से हुआ और क्या तकनीकी उन्नति इन महलों की संरचना में भूमिका निभाई थी। वर्तमान समय में इन महलों का संरक्षण एक चुनौती बन गया है, और इसलिए इनकी निर्माण शैलियों और तकनीकी प्रक्रियाओं का अध्ययन कर यह समझने की आवश्यकता है कि कैसे इन ऐतिहासिक धरोहरों को संरक्षित किया जा सकता है।

Copyright @ 2025 Author

शोध का उद्देश्य: इस शोध का मुख्य उद्देश्य यह है कि वडोदरा शहर के शाही महलों को न केवल एक स्थापत्य नमूने के रूप में समझना है, बल्कि इन्हें भारतीय इतिहास और विज्ञान के संदर्भ में सही परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करना भी है। इसके साथ ही, इस शोध का उद्देश्य इन महलों के संरक्षण के लिए किए गए प्रयासों का आकलन करना और उनमें सुधार के लिए सुझाव देना है, ताकि इन ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण और पुनर्निर्माण भविष्य में और अधिक प्रभावी तरीके से किया जा सके। इसमें विशेष ध्यान दिया जाएगा कि कैसे इन महलों की स्थापत्य कला, निर्माण तकनीक, और सांस्कृतिक महत्व को समझते हुए, उन्हें आने वाली पीढ़ियों के लिए संरक्षित किया जा सके। जिस प्रकार गायकवाड़ वंश और मुग़ल काल के दौरान वडोदरा शहर के शाही महल का निर्माण हुआ, उसकी स्थापत्य कला की विशेषताएँ और उसमें इस्तेमाल की गई तकनीकी प्रक्रियाओं को समझा जाए।[5] वर्तमान समय में इन महलों के संरक्षण और उनकी निर्माण विधियों का अध्ययन कर यह समझने की आवश्यकता है कि ये महल भारतीय निर्माण कला, वास्तुकला विज्ञान, और इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

उद्देश्य और लक्ष्य:

1. **बड़ौदा शहर के शाही महलों के निर्माण और स्थापत्य कला की विशेषताओं का विश्लेषण करना:** महल की वास्तुकला, सामग्री, निर्माण प्रक्रिया, और निर्माण के उद्देश्य को समझना और उनका अध्ययन करना।
2. **इन शाही महलों के निर्माण के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक कारणों का अध्ययन करना:** इन महलों के निर्माण के पीछे के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ को समझना और यह जानना कि किस तरह ये महल राजनीतिक शक्ति और समृद्धि का प्रतीक थे।
3. **धातु निर्माण की प्रक्रिया और इस्तेमाल की गई तकनीकों का विश्लेषण करना:** वडोदरा के शाही महल निर्माण में किस प्रकार की धातु शिल्प और निर्माण तकनीकों का उपयोग किया गया, इसका विश्लेषण करना, और यह समझना कि उस समय की वैज्ञानिक और तकनीकी उन्नति का प्रभाव इन महलों पर कैसे पड़ा।
4. **गायकवाड़ और मुग़ल काल के दौरान भवन निर्माण तकनीकों में हुए विकास का अध्ययन करना:** गायकवाड़ और मुग़ल काल के दौरान वडोदरा के महलों में लागू की गई तकनीकों और निर्माणशैलियों का अध्ययन करना, और यह समझना कि कैसे इन तकनीकों ने इन शाही महलों की वास्तुकला को प्रभावित किया।

इस शोध का उद्देश्य वडोदरा के शाही महलों की वास्तुकला और निर्माण प्रक्रिया को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझना है, ताकि उनकी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण किया जा सके और उनका महत्व समकालीन वास्तुकला में उजागर हो सके।

मुख्य निष्कर्ष:

वडोदरा शहर के शाही महलों के निर्माण का अध्ययन करते हुए कई महत्वपूर्ण तथ्य सामने आए हैं, जो न केवल स्थापत्य और तकनीकी दृष्टिकोण से रोचक हैं, बल्कि ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व भी रखते हैं।

वडोदरा (बड़ौदा) के शाही महल तथा गायकवाड़ द्वारा बनाए गए शाही महलों की सूची:

1. **लक्ष्मी विलास पैलेस** - वडोदरा (बड़ौदा)
2. **शिव महल** - वडोदरा (बड़ौदा)

 Copyright @ 2025 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-15, Issue-02, No.03, February: 2025

3. **मकरपुरा महल** - वडोदरा (बड़ौदा)
4. **इंदुमती पैलेस** - वडोदरा (बड़ौदा)
5. **धैर्य प्रसाद पैलेस** - वडोदरा (बड़ौदा)
6. **नजरबाग** - वडोदरा (बड़ौदा)
7. **प्रताप विलास पैलेस** - वडोदरा (बड़ौदा)
8. **मोतीबाग पैलेस** - वडोदरा (बड़ौदा)
9. **बलवंतराव महल पैलेस** - वडोदरा (बड़ौदा)
10. **लालबाग पैलेस** - वडोदरा (बड़ौदा)
11. **साकरवड़ा महल** (महाराजा पैलेस) - वडोदरा (बड़ौदा)

वडोदरा से बाहर गायकवाड़ द्वारा निर्मित शाही महल:

1. **जयमहल महल** - वडोदरा (बड़ौदा) - मुंबई
2. **राजमहल पैलेस** - अमरेली
3. **राजमहल पैलेस** - मेहसाणा

ये महल आज भी शाही परिवार का गौरवशाली इतिहास संजोए हुए, शान से खड़े हैं।

लक्ष्मीविलास पैलेस:

यह शाही महल, जिनकी संरचना का निर्माण इंडो-सरसेनिक वास्तुकला शैली के विकास को ध्यान में रखते हुए 18वीं शताब्दी के आस-पास हुआ था, का उद्देश्य निजी महल का निर्माण था। इस महल का अध्ययन इस बात को रेखांकित करता है कि भारत में उस समय तकनीकी और इमारत निर्माण का ज्ञान कितना उन्नत था।

सयाजीराव गायकवाड़ की अभिलाषा थी कि वह एक ऐसा निजी महल बनवाएं जो शाही रूप और अत्याधुनिक तकनीक से सुसज्जित हो। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए उन्होंने इंडो-सरसेनिक वास्तुकला का प्रयोग कर 18वीं शताब्दी में इस महल का निर्माण कार्य शुरू किया। इस महल में अत्याधुनिक तकनीक, श्रेष्ठ वास्तुकला, और सुंदर निर्माण कला का उपयोग किया गया, जिसके परिणामस्वरूप एक आलिशान शाही महल तैयार हुआ। सयाजीराव गायकवाड़ के उत्तराधिकारियों ने इस महल को सहेजते हुए महाराजा की यादों को संजोकर रखा है।[6]

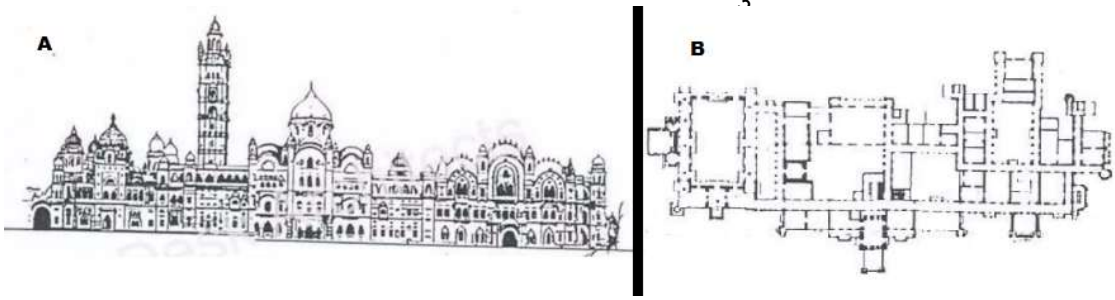

Figure 1: A- Front view of Laxmi Vilas Palace, B- Sky View Plan of Laxmi Vilas Palace[15]

हालांकि गायकवाड़ और मुगलों के बीच कोई सीधा संघर्ष नहीं था, फिर भी उन्होंने अपनी मातृभूमि की सुरक्षा और गौरव को सर्वोपरि माना। वे अपनी जनता के प्रति अपनी जिम्मेदारी कभी नहीं भूले और हमेशा चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहते थे। ऐसे शाही महल का निर्माण उनके दृष्टिकोण और उनके समय की राजनीतिक और सामाजिक स्थिति को दर्शाता है।[7]

Copyright @ 2025 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-15, Issue-02, No.03, February: 2025

Figure 2: 3D Model view of Laxmi Vilas Palace

इंडो-सारसेनिक वास्तुकला: एक पुनरुत्थानवादी शैली है, जो पारंपरिक भारतीय और ब्रिटिश वास्तुकला के तत्वों को जोड़ती है। इसकी विशेषताएँ इस्लामी डिज़ाइन और भारतीय सामग्रियों के मिश्रण पर आधारित हैं। भारत में इसे ब्रिटिश वास्तुकारों द्वारा विकसित किया गया था, और इसमें प्याज के गुंबद, लटकते हुए कंगनी, नुकीले या स्कैलप्ड मेहराब, गुंबददार छतें, गुंबददार खोखे, बुर्ज या मीनारें, हरम खिड़कियाँ, खुले मंडप और छेदी हुई गैलरी जैसी विशिष्ट विशेषताएँ हैं।[8]

लक्ष्मी विलास पैलेस के बारे में तथ्य:[12]

1. यह कथित तौर पर अब तक निर्मित सबसे बड़ा निजी आवास है।
2. यह बकिंघम पैलेस से चार गुना बड़ा है।
3. निर्माण के समय इसमें लिफ्ट थी, जो उस समय दुर्लभ थी।
4. इसका आंतरिक भाग यूरोप के एक विशाल ग्रामीण घर जैसा दिखता है।
5. 1930 के दशक में महाराजा प्रतापसिंह द्वारा यूरोपीय मेहमानों के लिए एक गोल्फ कोर्स बनाया गया था। उनके पोते समरजीत सिंह ने इसे नवीनीकरण के बाद जनता के लिए खोल दिया।
6. यहां कई बॉलीवुड फिल्मों की शूटिंग की गई है, जैसे कि प्रेम रोग (1982), दिल ही तो है (1993), सरदार गब्बर सिंह (2016), और ग्रैंड मस्ती (2013)।
7. नवलखी बावड़ी 1405 ईस्वी की है और महल परिसर के भीतर एक प्रमुख आकर्षण है।
8. यहाँ एक छोटा सा चिड़ियाघर है, जहाँ आप मगरमच्छों को देख सकते हैं।
9. महाराजा फतेह सिंह संग्रहालय में राजा रवि वर्मा की दुर्लभ पेंटिंग और एक लघु रेल लाइन भी है।
10. महल के पास मोती बाग क्रिकेट ग्राउंड है, जिसमें स्विमिंग पूल, क्लब हाउस, व्यायामशाला और गोल्फ कोर्स शामिल हैं।
11. महल में अब भी बड़ौदा के पूर्व शाही परिवार के सदस्य रहते हैं।
12. महल परिसर में मोती बाग पैलेस, महाराजा फतेह सिंह संग्रहालय, और लक्जरी एलवीपी भोज और सम्मेलन भवन भी हैं।
13. मेजर चार्ल्स मंट को महल का मुख्य वास्तुकार माना जाता है।
14. लक्ष्मी विलास पैलेस लगभग 700 एकड़ में फैला हुआ है।
15. शाही गायकवाड़ परिवार ही इस महल का मालिक है।

लक्ष्मी विलास पैलेस का मूल्यांकन:

वडोदरा में लक्ष्मी विलास पैलेस 1890 में महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ III द्वारा 27,00,000 रुपये (या 1,80,000 पाउंड) में बनाया गया था, जो उस समय बहुत बड़ी राशि थी। इस महल का क्षेत्रफल 700 एकड़ में

Copyright @ 2025 Author

फैला हुआ है, और इस पर स्थित मोती बाग क्रिकेट ग्राउंड और नवलखी बावड़ी इसे एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थल बनाते हैं।[9]

महल परिसर में स्थित बागीचे, फव्वारे और लॉन ब्रिटिश बागवानी विशेषज्ञ विलियम गोल्ड्रिग द्वारा डिज़ाइन किए गए थे। महल का मुख्य आकर्षण दरबार हॉल है, जिसकी दीवारों पर की गई कारीगरी और छत पर चित्रकारी बेहद आकर्षक हैं। यहाँ गायकवाड़ परिवार की धरोहरें जैसे पुरानी पेंटिंग्स, मूर्तियाँ, और शस्त्र प्रदर्शित किए गए हैं।

महल के मूल्यांकन में इसकी भव्यता, ऐतिहासिक महत्व, और संरचना के आधार पर यह अनुमानित मूल्य लगभग 24,393 करोड़ रुपये है, जो इसकी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर के मूल्य को दर्शाता है।[10]

महल के मुख्य आकर्षण:

- **दरबार हॉल:** यह हॉल अपनी भव्यता और दीवारों पर की गई कारीगरी के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ की छत पर चित्रकारी और संगमरमर की मूर्तियाँ अत्यधिक आकर्षक हैं। इसकी लंबाई 95Ft. और चौड़ाई 52 Ft.है।[11]
- **संग्रहालय:** महल के अंदर एक संग्रहालय भी है, जहाँ गायकवाड़ परिवार की धरोहरें, जैसे पुरानी पेंटिंग्स, मूर्तियाँ, और हथियार प्रदर्शित किए गए हैं।[13]
- **बगीचे:** महल के चारों ओर हरे-भरे बगीचे और गोल्फ कोर्स हैं, जो महल की सुंदरता को और बढ़ाते हैं।[14]

इस प्रकार, लक्ष्मी विलास पैलेस न केवल स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण है, बल्कि यह भारतीय इतिहास, संस्कृति और वास्तुकला का महत्वपूर्ण धरोहर भी है।

निष्कर्ष:

लक्ष्मी विलास पैलेस भारतीय इतिहास और संस्कृति का अनमोल रत्न है। यह महल न केवल वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण है, बल्कि यह भारत की शाही विरासत का प्रतीक भी है। इसकी भव्यता और ऐतिहासिक महत्व इसे भारत के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक बनाते हैं। वर्तमान में लक्ष्मी विलास पैलेस गायकवाड़ परिवार का निवास है, और इसे पर्यटकों के लिए भी खोला गया है। लोग यहाँ इसकी भव्यता को देखने और वडोदरा की सांस्कृतिक धरोहर का अनुभव करने आते हैं।

संदर्भ:

1. गायकवाड़, ऍफ़. (1890)। सयाजीराव ऑफ़ बड़ौदा: द प्रिंस एंड द मैन, बॉम्बे: पोपुलर प्रकाशन।
2. गेड्डेस, पी. (1916)। डेवलपमेंट एंड एक्सपैंशन ऑफ द सिटी ऑफ बड़ौदा, आदेश पर प्रकाशित रिपोर्ट, लक्ष्मी विलास प्रेस।
3. जयराज, जी. (2011)। इंडो-सारसेनिक आर्किटेक्चर इन चेन्नई, चेन्नई विश्वविद्यालय।
4. जोशी, संजीव (2015)। रॉबर्ट फैलोकेस शताब्दी प्रदर्शनी 2015, वड़ोदरा, भारतीय वास्तुकार और निर्माता। जसुभाई मीडिया प्रा.लि., मुंबई।
5. लैंग, जे. देसाई, एम.आर. (1997)। वास्तुकला और स्वतंत्रता: पहचान की खोज - भारत 1818 से 1980 तक, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
6. लक्ष्मी विलास पैलेस (2012)। महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ III, gaekwadofbaroda.com, मई 2014 में एक्सेस किया गया।

 Copyright @ 2025 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-15, Issue-02, No.03, February: 2025

7. मेटकाफ, थॉमस आर. (1982)। राज के तहत इंडो-सारसेनिक वास्तुकला में एक परंपरा बनाई गई, इतिहास टुडे, 32 अंक: 9 में प्रकाशित।
8. नागर, एम. (1992)। श्री सयाजीराव गायकवाड़, महाराजा ऑफ बड़ौदा: सार्वजनिक पुस्तकालयों के प्रमुख प्रवर्तक।
9. रमुसैक, बी. (2008)। द इंडियन प्रिंसेस एंड देयर स्टेट्स, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 197-198, 218।
10. सर्जेंट, वी. आर. (1928)। द रूलर ऑफ बड़ौदा: ए क्रॉनिकल ऑफ द लाइफ एंड वर्क ऑफ द महाराजा गायकवाड़, लंदन: युनिवर्सल लाइब्रेरी।
11. सिंह, एच. (2007)। औपनिवेशिक और उपनिवेशोत्तर इतिहासलेखन और रियासतें, 'भारतीय रियासतें, लोग, राजकुमार और उपनिवेशवाद' में, संपादित बाय अनसर्ट वाल्ट्रोड वाल्ट्रॉड और पाती बिस्वामॉय: रूटलेज पब्लिशर्स, 15।
12. वाल्ट्रोड, इ. और बिस्वामॉय, पी. (सं.) (2007)। भारतीय रियासतें: लोग, राजकुमार और उपनिवेशवाद, रूटलेज, 7-8।
13. विकिपीडिया। अलग-अलग प्रणालियाँ, wikipedia.org/wiki/separate_system, मार्च 2013 में एक्सेस किया गया।
14. विकिपीडिया। पैनोप्टिकन, wikipedia.org/wiki/panopticon, मार्च 2013 में एक्सेस किया गया।
15. वड़ोदरा का वैभव - श्री जगजीवनदास दयालजी मोदी।

Copyright @ 2025 Author